Vol 3 Issue 11 Dec 2013 ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-11, Dec-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

रामचरितमानसः पाश्चात्य विद्वानो की दृष्टि में

आ ा एस. खेडेकर
सहायक–प्राध्यापक (हिन्दी) श्रीमती ल.रा.तो. वाणिज्य महा. अकोला (महा.)

सारांश:गोस्वामी तुलसीदास मूलरुप से मानवीय जीवनास्था के कवि माने जाते हैं । उनका महानतम काव्य 'रामचरितमानस' मध्ययुगीन हिन्दी – साहित्य का श्रेष्ठतय काव्य है । रामचरितमानस में उन्होने अपने आराध्य के माध्यम से समष्टि चेतना को समर्पित किया है तथा इसकी सबसे बडी उपलब्धि है कि इसे लोक – जीवन में व्यापक प्रतिष्ठा मिली । 'तुलसीदासजी' का पाठक वर्ग बहुत व्यापक है, इसलिए 'मानस' के िन्न – िन्न पक्षों पर विद्वानों द्वारा ॉति – ॉति के विचार व्यक्त किये गये हैं ।

प्रस्तावना –

'रामचरितमानस' की तुलना विश्व–साहित्य में अतुलनीय है । इसे न केवल ारतीय विद्वानों ने वरन् पाश्चात्य विद्वानों ने ी महान् काव्य की संज्ञा से अ िहित किया है । यदि यह कहा जाए कि हिन्दी साहित्य में सबसें अधिक शोधें 'रामचरितमानस' और तुलसीदास पर की गयी है, तो अत्युक्ति न होगी । इस शोध – पत्र में 'रामचरितमानस' सम्बन्धी पाश्चात्य विद्वानों के विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

1) होरेस हमेन विल्सन (एच.एच.विल्सन) –

विल्सन को रामचरितमानस का प्रथम पाश्चात्य समीक्षक माना जाता है। ईस्ट इण्डिया कंपनी की चिकित्सा सेवा के कारण लंदन से कलकत्ता आए । विल्सन ने ' क्तमाल' के आधार पर पहले 'तुलसीदास' के चरित्र का अध्ययन किया । विल्सन के अनुसार ''रामचरितमानस' का हिन्दू समाज के बहुत बडे ाग पर इतना अधिक प्र ाव पडा, जितना कि वाल्मीकी की संस्कृत रामायण का ी नहीं पडा था''[1] पेशे से चिकित्सक होने के कारण ी विल्सन ने ' क्तमाल' एवं तत्कालीन समाज में प्रचलित तुलसी सम्बन्धी लोक–कथाओं को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया ।

2) गार्सा द तासी –

विल्सन के पश्चात मानस के पाश्चात्य विद्वानों की श्रेणी में 'गार्सा द तासी' का नाम आता है । 'हिन्दुई और हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास । के लेखक 'तासी' ने मानस को ्मवश 'ब्रज ाषा' का काव्य ग्रन्थ बताया है । कथानक का अतिसंक्षेप में वर्णन किया है व सात ागों में वि ाजित बताया है । जैसे 'बालकाण्ड' अर्थात बाल्यावस्था का ाग, सम्पूर्ण रचना की ूमिका, उससे विष्णु के अवतार के कारणों आदि का पता लगता है । अयोध्याकाण्ड (अयोध्या) का ाग, इसमें इस नगर के राम के कार्यो का उल्लेख है । अरण्यकाण्ड उसमें राम का जंगलों और वीरानों में जाने की बात का उल्लेख है । किर्श्किंधाकाण्ड, गोलकुण्डा वाला ाग, रावण सीता को हरता है और लंका ले जाता है । सुन्दरकाण्ड अर्थात सुन्दर ाग, इसका सम्बन्ध राम और उनकी पत्नी सीता के सौन्दर्य और गुणों से है । लंकाकाण्ड लंका वाला ाग जहां रावण सीता को ले गया था । अंत में उत्तरणकाण्ड उत्तर का ाग, उसमें लंका से लौटने के बाद राम के कार्य है ।[2]इससे स्पष्ट है कि तासी ने 'मानस' के कथानक का अतिसंक्षेप में वर्णन करने का प्रयास किया है । तासी ने सर्वप्रथम तुलसी के हिन्दुई के अत्यन्त प्रसिध्द कवि होने की उदघोषणा की है । तासी 'रामचरितमानस' की शास्त्रीय, सुन्दर एवं तर्क संगत समीक्षा न कर पाये हो, लेकिन फिर ी उन्होने पाश्चात्य जगत को 'रामचरितमानस' की महत्ता से अवगत कराने का प्रयास किया।

3) डॉ. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन –

डॉ. गियर्सन महान, ारतीय ाषाविद थे, 'लिग्विस्टिक सर्वे आफ इंण्डिया' इस बात का सबसे बडा प्रयत्न है । डॉ. ग्रियर्सन ने 'तुलसीदास' एवं 'रामचरितमानस' पर समय–समय अनेक निबंध लिखे थे । 'रामचरितमानस' की लोकप्रियता के सम्बन्ध में ग्रियर्सन ने बडा विशद वर्णन किया है । ग्रियर्सन के अनुसार मानस हिन्दू जनता के जीवन चरित्र और व्यवहार में तीन सौ वर्षो से आत्मसात हो गया है। वे केवल न इसके काव्य – सौन्दर्य पर मुग्ध होकर इसकी प्रशंसा करते हैं वरन धर्म–ग्रन्थ के रुप में इसका आदर करते हैं । यह दस करोड लोगों की बाईबिल है और उन्हे इसका इतना ज्ञान है जितना कि पदारियों को बाईबिल का ज्ञान नहीं है।'' समस्त ारत में ऐसा एक ी व्यक्ति ढुँढ पाना मुश्किल कार्य है, जिस पर मानस का रंग न हो । सामान्य से सामान्य व्यक्ति ी 'मानस' की चौपाइयों को प्रमाण के रुप में व्यवहृत होते देखा जा सकता है । ग्रियर्सन ने यह ी कहा है कि – 'रामचरितमानस' महलों से लेकर झोपडों तक प्रत्येक के हाथों में पाया जाता है और हिन्दू समाज के प्रत्येक वर्ग व्दारा, चाहे वह उच्च हो या निम्न, धनी हो या निर्धन, जवान हो या बूढा, पढा जाता है, सुना जाता है और प्रशंसित किया जाता है।'' ग्रियर्सन ने 'मानस' की लोकप्रियता, उसमे 'वर्णित धर्म, मानस का रचनाकाल, स्थान, टीकाएँ, ाषा, शैली, पात्र एवं चरित्र, चित्रकला, नाट्य तत्व एवं प्रकृति – चित्रण आदि की बहुत सुन्दर समीक्षा की है । एन्साइक्लोपेडिया ब्रिटेनिका में इस बात का उल्लेख किया गया है कि डा. ग्रियर्सन 'मानस' के ही नहीं वरन् तुलसी की अन्य रचनाओं के ी श्रेष्ठ समीक्षक है ।

4) रेवडेन्ड एडविन ग्रीव्ज –

डॉ. ग्रिथर्सन के पश्चात एडविन ग्रीव्ज प्र ुत्व पाश्चात विद्वान है । इन्होने ी 'रामचरितमानस' की बहुत सुन्दर समीक्षा की है । कहीं, कहीं तो डॉ. ग्रियर्सन को ी पीछे छोडा है । सन 1899 ई. में ग्रीब्ज ने 'ए स्केच आफ हिन्दी लिटरेचर' नामक ग्रन्थ लिखा है । इस ग्रन्थ में उन्होने मानस की ी समीक्षा प्रस्तुत की है । ग्रीब्ज के अनुसार तुलसी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, क्योंकि उन्होने मानसकी शुरुवात संस्कृत के श्लोकों से ही की है। संस्कृत में ी कर

सकते थे, लेकिन उन्होने जन ाषा (अवधी) में इस महान काव्य की रचनाकी । 'रामचरितमानस' की रचना जन ाषा में करने के कारण तुलसी को पंडितो का कोप ाजन बनना पडा, यह तथ्य सर्वविदित है । 'ग्रीब्ज' ने मानस को रस से आपूरित बताया है । राम का चरित्र नव रसों का सरोवर है। रामचरितमानस की कथावस्तु, चित्रण की अनेकरुपता, ओज, लय, ाषा काव्य– सौन्दर्य एवं क्ति – ावना आदि पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है । 'मानस' को हिन्दुओं की बाईबिल बताया है । उन्होने ारत वर्ष के क्तों एवं कवियों में श्रेष्ठ तुलसीदास के तब तक अमर बने रहने की विष्यवाणी की है, जब तक कि हिन्दी का अस्तित्व रहेगा । उन्होने अत्यन्त ावुक होकर 'मानस' की समालोचना की है ।

निष्कर्ष –

'रामचरितमानस' के सन्द ' में पाश्चात्य विद्वानों ने तथ्यों के चयन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण के सम्बन्ध में बडी सतर्कता बरती है । पाश्चात्य विद्वानों ने बडे गर्व के साथ कहा है कि – 'रामचरितमानस' का ारत के एक सामान्य मनुष्य को उतना ज्ञान है, जितना कि अंग्रेज पादरी को बाईबिल का नही है । प्राय स ी पाश्चात्य विद्वानों ने तुलसीदास के जीवन – वृत्त 'मानस' की लोकप्रियता ाषा शैली, काव्य– सौष्ठव, क्ति, धर्म, दर्शन, चरित्र–चित्रण तथा स्रोतों पर साधिकार लिखा है । उन्होने मानस की धर्म ावना, नीतिसमाज, चिन्तन, आदर्श जीवन तथा लोकमंगल आदि का बडा विवेचन किया है । पाश्चात्य विद्वानों ने समन्वय को हिन्दू धर्म का प्रमुख गुण बताया है । मानस में आए हुए अरबी और उर्दू आदि के शब्दों को पाश्चात्य विद्वानो ने तुलसी की समन्वय ावनाका प्रतीक माना है । 'मानस' की समीक्षा करके विद्वानों ने पाश्चात्य जगत से उसका परिचय कराया है । 'रामचरितमानस' की लोकप्रियता एवं सार्व ौमिक व्यापकता का रहस्य उसमें वर्णित ावो एवम् विचारों की विश्वव्यापकता है । हेनरी मिलर नें ठीक ही कहा है – ''विचारों की विश्वव्यापकता प्रमुख और सर्वोत्तम है। अनु ूति और ज्ञान से परे कुछ ी नहीं है।''

संद 'ग्रंथ सूची –

1) एच.एच. विल्सन, रिलिजियस सेक्टस आफ दि हिन्दूज, पृ. 32
2) लक्ष्मीसागर वर्ष्णेय हिन्दुई साहित्य का इतिहास, पृ. 90–100
3) डॉ. ग्रियर्सन तुलसी ग्रन्थावली ाग तीन, पृ. 10–11
4) हेनरी मिलर दबुक्स आफ माय लाईफ, पृ. 282
5) मानस अनुशीलन पाश्चात्य विचारक–ब्रज गोपालसिंह
6) डॉ. सुर्यप्रकाश दीक्षित–तुलसी मानस आस्था का अर्घ्य

आ ा एस. खेडेकर
सहायक–प्राध्यापक (हिन्दी) श्रीमती ल.रा.तो. वाणिज्य महा. अकोला (महा.)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net